मैथिलीषरण गुप्त और भारतीयता की अवधारणा

MRS. PINKI DALAL
Prof. Hindi Vaish Arya Kanya Mahavidyalaya Bahadurgarh
Distt. Jhajjar (Haryana)

भारतीयता की अवधारणा क्या हैं इसकी परिभाशा दे पाना कठिन है। किसी भी देष की अवधारणा को जानने के लिए उस देष के साहित्य का अध्ययन करना आवष्यक हैं। क्योंकि किसी भी देष के साहित्य में सांस्कृतिक व सामाजिक परिस्थितियाँरहती ही हैं।

किसी भी देष की अपनी परम्परा, अपना इतिहास होता है। और उस देष की संस्कृति उस देष की आत्मा होती है। भारतीय संस्कृति विष्व की सबसे पुरानी एवम् समृद्ध संस्कृति मानी जाती है। इसे सभी संस्कृतियों की जननी कहा जाता है।

विष्व में कई संस्कृति आई और मिट गई परन्तु कुछ तो बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी। अतः भारतीयता की अवधारणा को स्पश्ट करने के लिए राश्टकवि मैथिली षरण गुप्त जी का काव्य लिया जा सकता है। आदि से लेकर अंत तक भारतीयता की पहचान तनिक भी धूमिल नहीं हुई है।

जैसा कि सदियों से सुनते आए है व कहते आए हैं कि भारत विभिन्ताओं का देष है और विभिन्नता में हि एकता है। समानता भारतीय संस्कृति की पहचान रही है।और इसी एकता अर्थात समानता ने भारत को नई पहचान दिलाई है। गुप्त जी की कविता 'समता का संवाद' में कहा भी है कि–

भारत माता का मन्दिर यह, समता का संवाद जहाँ
सबका षिव कल्याण यहा है,पावें सभी प्रसाद यहाँ[1]

अर्थात हमारा देष सभी के साथ समानता का व्यवहार करता है। यहाँ सभी बराबर है। जिस प्रकार मंदिर में मंगल कामना हेतु दर्षनार्थि जाते है और सभी को एक जैसा प्रसाद मिलता है। उसी प्रकार हमारे देष में सभी के साथ एक जैसा व्यवहार होता है।

हमारी सभ्यता विष्व की महान सभ्यता में से है। मोहन जोदडों के बाद से यह मिस्र, मेसोपोटामिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं की समकालीन समझी जाती है। गुप्त जी ने अपनी कविता 'हमारी सभ्यता' जो भारत भारती के अतीत खण्ड में सकंलित है में कहा है–

षैषव दषा में देष प्राय जिस समय सब व्याप्त थे
निःषेश विशयों में हम प्रोढ़ता को प्राप्त थे
संसार को पहले हमीं ने ज्ञान षिक्षा दान की

आचार की,व्यापार की,व्यवहार की,विज्ञान की [2]

देखो हमारा विष्व में कोई नहीं उपमान था

नर देव थे हम और भारत देव लोक समान था[2]

हजारो वर्शो के बाद भी भारतीयसंस्कृति आज भी अपने मूल स्वरूप में जीवित है और इसकी क्षेश्ठता के सम्बन्ध में गुप्त जी कहते–

भू लोक का गौरव प्रकृति का पुण्यलीला–स्थल कहाँ

फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगा जल जहाँ

संपूर्ण देषों से अधिक किस देष का उत्कर्श हैं

उसका कि जो ऋशि भूमि है,वह कौन?

वह भारत वर्श है।[3]

अर्थात पूरे विष्व का जो गौरव है। जहाँ प्रकृति में भी सौंदर्य है। हिमालय व गंगा जल जहाँ फैले है। सम्पूर्ण देषों में जिसका सबसे ज्यादा उत्कर्श है।वह और कोई नही बल्कि ऋशियों की भूमि भारतवर्श है।

पुराणों से सिद्ध है कि भारतवर्श के ब्रह्मावर्त प्रदेष में ही ब्रह्मा जी ने सृश्टि की रचना का आरम्भ किया था । हमारे पूर्वज इतने महान हुए है कि उनका वर्णन हमीं नही अपितु समस्त संसार कर रहा है। और गुप्त जी ने भारत भारती के अतीत खण्ड में कविता हमारे पूर्वज में कहा है–

उन पूर्वजों की कीर्ति का वर्णन अतीव अपार है

गााते नहीं उनकें हमीं गुण गा रहा संसार है[4]

भारतीय समाज में हार न मानने वाली परम्परा है। आगे बढना भारतीय समाज की पहचान रही है। और भारतीय लोगों को आगे बढने की प्ररेणा गुप्त जी के काव्य से मिलती है। वे लिखते है कि–

गिर गिर कर ही तो संभलेगा

अटगेगा–झटकेगा

तभी लगेगा न तु ठिकाने

जब भूलेगा भटकेगा[5]

किसी भी कार्य को करने हेतू प्रयत्नषील रहना भारतीयता की पहचान रही है।और अपने कर्तव्यनिश्ठ स्वभाव के कारण वह अपनी मंजिल भी प्राप्त कर लेता है। इसी सन्र्दभ में कविता स्वस्ति और संकेत में संकलित कविता नही प्रार्थना में ,प्रयत्न में कहा –

न आ न आ तू मैं ही आउँ

नहीं प्रार्थना में प्रयत्न में प्रभों तुझें मैं पाउँ[6]

भारतीय समाज में नारी सदैव एक ऐसा चरित्र रही है। जिसमें सहनषीलता है व अत्याचारों को सहन करने वाली हैं। भरतीय नारी मर्यादा की पहचान रही है। भारतीय नारी का मार्मिक वर्णन यषोधरा में करते हुए गुप्त जी कहते है–

अबला जीवन हाय तुम्हारी यहीं कहानी ाँ

आँचल में है दूध और आँखों में पानी[7]

ये पक्तियॉ यषोधरा की ही नहीं अपितू गुप्त जी के संपूर्ण काव्य की पहचान बन गई।

निसंदेह भारतीय संस्कृति में समानता, निरन्तरता, क्षेश्ठता, चरित्रता, आदि अनेक विषेशताए है जो भारतीय संस्कृति को अलग पहचान देती है। लेकिन एक सच्चाई यह भी है कि आज भारतीय अपनी संस्कृति को नहीं बल्कि पाष्चात्य अंधानुकरण कर रहा है। यह कुछ हद तक तो सही है लेकिन क्या यह सही है कि हम इस बदलाव की वजह से अपनी संस्कृति को हि भूल जाए। बदलाव प्रकृति का नियम है। नीव हमारी वही रहे सिर्फ उपर का ढांचा बदल दिया जाए वो भी इसलिए क्योंकि स्वस्थ परम्परा ही स्वस्थ समाज का निर्माण करेगी। हमें अपनी पुरानी परम्परा जैसे दहेज प्रथा, बाल विवाह को बदलना ही होगा ।

सन्दर्भ सूचि–

1मैथिली षरण गुप्त कविता'समता का संवाद' संकलित 'स्वस्ति और संकेत' पृ0–58

2 भारत भारती के अतीत खण्ड कविता 'हमारी सभ्यता' पृ0–21

3 भारत भारती के अतीत खण्ड कविता भारत की क्षेश्ठता पृ0–11

4भारत भारती के अतीत खण्ड कविता 'हमारे पूर्वज' पृ0–13

5 मैथिली षरण गुप्त 'स्वस्ति और संकेत' में संकलित 'आगे बढ' पृ0–61

6 मैथिली षरण गुप्त स्वस्ति और संकेत में संकलित कविता 'नहीं प्रार्थना ,में प्रयत्न में' पृ0–65

7'मैथिली षरण गुप्त' नवल किषोर 'यषोधरा' में संकलित पृ0–253